Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

हिन्दी साहित्य में निबंध परम्परा और भाषा

डॉ. रोशनलाल अहिरवार*

* प्रभारी प्राचार्य, सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय महाविद्यालय, शाहगढ़, सागर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल साहित्य में गद्य लेखन की परम्परा को विकसित करने तथा विभिन्न विद्याओं के विकास के लिये जाना जाता है। आधुनिक साहित्य में निबंध का विशिष्ट महत्व है। निबंध विद्या के विकसित होने का अनुसंधानात्मक अध्ययन किया गया है।
शब्द कुजी – भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग,शुक्ल युग शुक्लोत्तर युग।

प्रस्तावना – हिन्दी साहित्य मे आधुनिक काल गद्य के विकास का काल है। गद्यकाल में निबंध विधा सर्वोपरि है। साहित्यिक विधाओं में निबंध विशेष रूप गद्य परिपुष्ट और व्यापक,बना रही है निबंध शब्द प्राचीन है यह (नि+बन्ध) से बना है, जिसका अर्थ बांधना, संग्रह करना आदि है। प्राचीन समय में लिखित भोज पत्रों को मजबूत धागे से बांधकर रखा जाना था निबंधन कहा जाता था। समयानुसार क्रमश: पृष्ठों को बांधने के स्थान पर विचारों का बांधना निबंधन अर्थ मे प्रयोग हुआ ।

आज निबंध को फेंच के 'एसाइ' तथा अंग्रेजी के 'एसे' Essay का पर्याय माना जाता है, संस्कृत में इसका समानार्थी शब्द 'प्रबंध' है जिसका मूल अर्थ है–संदर्भ या ग्रंथ रचना। निबंध को परिभाषित करने के अनेक प्रयास किये गये हैं, जैसे निबंध साहित्य के जन्मदाता माईकेल डी मान्तेन निबंध को 'विचारों उद्धरणों और कथाओं के मिश्रण को मानते हैं।'

'Essay is a modly of reflection qotation and anecdotes'[1] मान्तेन के निबंध 1580 ई. में एसेज ऑव मेस्सीर माइकेल, सीन्योर दि मांतेन' के नाम से प्रकाशित हुये।

अंग्रेजी साहित्य के प्रथम निबंधकार लार्ड बेकन 'मन के प्रकीर्ण चिंतन' को निबंध मानते हैं। इनके निबंध संग्रह का नाम Essayes है जो 1597 ई. में प्रकाशित हुआ था। इनके निबंध नोट्स रूप में थे और उसने मोंतेन से प्रभावित होकर 'एसे' Essay शब्द का प्रयोग स्फुट साहित्यिक प्रयास के अर्थ में किया। वे अपने निबंधों के विषय में लिखते हैं–

'Brief notes set down rather significautly than anxiously' [2] आपने निबंधों को संक्षिप्त टिप्पण के रुप में ग्रहण किया है निबंध किसी विषय–विशेष पर एक ऐसी रचना है जिसकी परिधि सीमित होने पर भी शैली प्राय: प्रौढ़ एवं परिमार्जित होती है।

भारतीय विद्वानों मे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है–'यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों में ही सबसे अधिक संभव होता है।'[3]

निबंध के संबंध मे बाबू गुलाबराय कहते है–'निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और संबद्धता के साथ किया गया हो।'[4]

हिन्दी निबंध साहित्य के विकास में पत्र–पत्रिकाओं का एवं राष्ट्रीय चेतना का विशिष्ट योगदान है। अंग्रेजी साहित्य के संपर्क से भारतीय जीवन में नव–जागृति, पत्र–पत्रिकाओं के प्रचार द्वारा गद्य का जो सरस और भावपूर्ण स्वरूप उदित हुआ उसे ही हम निबंध कहते हैं। हिन्दी गद्य साहित्य का सही विकास अंग्रेजी राज्य स्थापित हो जाने के बाद ही मिलता है।

भारतेन्दु युग के पूर्व ब्रजभाषा गद्य में बनारसीदास जैन ने 'परमार्थ वचनिका' और 'उपादान निमित्त की चिट्ठी' दो निबंध लिखे हैं। बनारसीदास जैन को हिन्दी का प्रथम निबंधकार माना जाता है। इनकी गद्य शैली और भाषा ब्रज है। गद्य शैली के सम्बन्ध में जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल लिखते हैं–'इनकी गद्य शैली सजीव और प्रभावपूर्ण है, शब्द सार्थक, प्रचलित और भावानुकूल प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता रखते हैं।'[5]
निबंध विचारात्मक कोटि के हैं। विषय गंभीर हैं, लेकिन विवेचन सरलता से किया है।

खड़ी बोली गद्य के चार प्रवर्तक हुए हैं–लल्लूजी लाल, सदल मिश्र, मुंशी सुदासुखलाल नियाज, सैयद इंशाअल्ला खॉ। खड़ी बोली गद्य के विकास में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र से कुछ समय पहले राजा शिवप्रसाद का लिखा 'राजा भोज का सपना' निबंध की कोटि की रचना तो हैं पर उसमें निबंध के महत्वपूर्ण तत्व आत्मीयता, वैयक्तिकता आदि का अभाव है। स्वामी दयानंद, श्रद्धाराम फुल्लौरी ने भी खड़ी बोली गद्य में कुछ निबंधों की सृष्टि की है।

भारतेन्दु युग – हिन्दी निबंधों के जन्मदाता भारतेन्दु हरिश्चंद्र हैं। भारतेन्दु युग हिन्दी निबंधों के जन्म और विकास का युग है। 'भारतेन्दु बाबू के समय से ही निबंध–रचना की परम्परा का आरंभ माना जाता है।'[6]

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' का प्रकाशन किया। देशभक्त और समाज सुधारक होने के कारण निबंधों में सामाजिक समस्याओं का चित्रण विस्तार से हुआ है। निबंधों में हास्य और व्यंग्य की छटा है– 'होली', 'त्यौहार', 'भूकम्पय, 'स्वर्ग में विचार सभा' आदि निबंध इसी श्रेणी के हैं। तत्कालीन समाज में रूढ़िवादिता, अंधविश्वास व्यापक रूप से विद्यमान था। भारतेन्दु ने अपने धार्मिक निबंधों में इनका विरोध किया। जैसे –'हम

मूर्ति पूजक हैं', 'ईश्वर का वर्तमान होना', 'भगवत स्तुति' आदि धार्मिक निबंध हैं।

राजनैतिक दुरावस्था को लक्ष्य करके उन्होंने राजनीतिक निबंध भी लिखे हैं, और तीखे व्यंग्य किये हैं। जैसे 'इंग्लैण्ड और भारतवर्ष', 'दिल्ली दरबार दर्पण', 'भारत वर्ष के सुधार के क्या उपाय हैं?' आदि उनके राजनीतिक निबंध हैं 'मित्रता', 'खुशी', 'अपठ'य आदि विचारात्मक निबंध लिखे हैं। साहित्यिक विषयों पर निबंधों में 'बंग भाषा की कविता', 'संगीत सार' आदि हैं।

भारतेन्दु की भाषा का एक व्यवस्थित, व्यवहारिक रूप मिलता है। उनकी भाषा के सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल ने लिखा है–'भारतेन्दु अपनी मॅजी हुई परिष्कृत भाषा सामने लाए तब हिन्दी बोलने वाली जनता को गद्य के लिए खड़ी बोली का प्रकृत साहित्यिक रूप मिल गया और भाषा के स्वरूप का प्रश्न न रह गया।'[7] भारतेन्दु ने हिन्दी गद्य शैली का एक नवीन और बिखरा रूप स्थिर किया है।

भारतेन्दु जी के समकालीन निबंधकारों में पण्डित बालकृष्ण भट्ट , पण्डित प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी, राधाचरण गोस्वामी, आदि का नाम आता है। भट्ट जी प्रगतिशील लेखक एवं हिन्दी के पहले सर्वश्रेष्ठ निबंधकार है। इन्होंने 'हिन्दी प्रदीपय का संपादन किया और उसमें सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक सभी प्रकार के निबंध लिखे। जहॉ एक ओर 'ऑख', 'नाक' जैसे साधारण विषयों पर उन्होंने बड़े रोचक निबंध लिखे हैं। मनोविकार से सम्बन्धित निबंधों में–'रूचि', 'आत्मगौरव', 'विश्वास', 'आशा' आदि निबंध हैं। कुछ निबंध साहित्यिक पद्धति के हैं जैसे 'ऑसू', 'लक्ष्मी', 'कालचक्र का चद्दर', 'माता का स्नेह', 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास' है। भावात्मक निबंधों में 'चंद्रोदय' प्रमुख है।

भारतेन्दु मण्डल में पण्डित प्रतापनारायण मिश्र का महत्वपूर्ण स्थान है। निबंधकार के रूप में वे विश्वस्तरीय सृष्टा हैं जिनकी तुलना मांतेन,लेम्ब इत्यादि से की जाती है। विचारात्मक निबंधों में जो स्थान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है, वही भावात्मक निबंधों में प्रताप नारायण मिश्र का। मिश्रजी ने साधारण और व्यावहारिक विषयों को रोचक, सरस एवं मनोरंजक रूप में उपस्थित किया है–'दांत', 'भौ', 'वृद्ध', 'बात' आदि। नित्य प्रति उपयोग में आने वाले छोटे–छोटे शब्दों पर रोचक और सुंदर निबंधो में 'द', 'ट', 'त' आदि निबंध हैं। इसी के साथ उन्होंने व्यंग्य–विनोदपूर्ण निबंध लिखे हैं जिनका साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है–'पढ़े लिखों का लक्षण', 'बन्दरों की सभा', 'रिश्वत' आदि। मिश्र जी के अन्य निबंधों में 'देशोन्नति', 'हमारी आवश्यकता', 'नारी', 'अंतिम भाषण', 'चिन्ता', 'विश्वास', 'होली है', 'गंगा जी', 'गोरक्षा', 'धरतीमाता' आदि हैं। डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे लिखते हैं–'मिश्र जी के निबंध उस संक्रांति–काल के बोधक हैं जबकि हिन्दी गद्य का रूप निर्धारित हो रहा था और साहित्य एवं संस्कृति के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्राचीन और नवीन के मध्य संघर्ष हो गया।'[8]

बदरीनारायण चौधरी ने आनंदकादम्बनी पत्रिका का संपादन किया । निबंधों के विषय साहित्य, राजनीति, धर्म तथा समाज से सम्बन्धित है। 'दिल्ली दरबार में मित्र मण्डली', 'समय', 'नेशनल कांग्रेस की दुर्दशा', 'फाल्गुन', 'ऋतु वर्णन', इनके श्रेष्ठ निबंध हैं।

लाला श्री निवास दास के 'भरतखंड की समृद्धि', 'सदाचरण' इनके प्रमुख निबंध हैं।

राधाचरण गोस्वामी के व्यंग्यात्मक निबंध हिन्दी निबंध साहित्य की अक्षय निधि है। 'यमपुर की यात्रा', 'हिंदु बांधव' इनके महत्वपूर्ण निबंध हैं। श्री मोहनलाल विष्णुलाल पंडया के निबंध सामाजिक हैं–'खुशामद', 'बंधुत्व किसे कहते हैं', 'हम लोगों की वृद्धि किस रीति से होगी' इनके प्रमुख निबंध हैं।

भारतेन्दु युग के निबंधों में आत्मीयता, सहजता, रोचकता और सजीवता आदि गुणों का समावेश मिलता है। निबंधो का उद्देश्य देश–प्रेम, राष्ट्रसुधार एवं व्यक्तित्व परिष्कार था निबंधकारों के विषय में रामविलास शर्मा का मत है–'जितनी सफलता भारतेन्दु युग के लेखकों को निबंध रचना में मिली, उतनी कविता और नाटकों में नहीं मिली। इसका एक कारण यह था कि पत्रिकाओं में नित्य प्रति लिखते रहने से उनकी शैली भी खूब निखर गई थी। दूसरी बात यह कि निबंध ही एक ऐसा माध्यम था, जिसके द्धारा उस युग के धक्कड़ लेखक बेतकल्लुफी से अपने पाठकों से बात कर सकते थे।'[9] हिन्दी का गद्य–शैली को विकसित एवं परिष्कृत करने में इन निबंधकारों का महत्वपूर्ण योगदान है।

द्धिवेदी युग : हिन्दी निबंध का दूसरा चरण द्धिवेदी युग है। पण्डित महावीर प्रसाद द्धिवेदी का हिन्दी साहित्य में एक निबंधकार के रूप में, एक आलोचक तथा भाषा सुधारक के रूप में अमूल्य योगदान है। भारतेन्दु युग तक भाषा का स्वरूप तो स्थिर हो चुका था, परन्तु व्याकरण सम्बन्धी दोषों से वह मुक्त नहीं हो पाई थी। आचार्य महावीर प्रसाद द्धिवेदी ने इन दोषों को दूर कर भाषा को शुद्ध और व्याकरण सम्मत बनाया। उन्होंने 1903 मे 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन किया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्धिवेदी युग के सशक्त निबंधकार हैं। उन्होंने विचारात्मक निबंधों की परम्परा को जन्म दिया। 'कविता', 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता', 'साहित्य की महत्ता', 'कवि कर्तव्य', 'कवि और कविता', 'प्रतिभा' आदि। स्वच्छंद विचारधारा के साथ मनोभावों को रोचक शैली में लिखे निबंधो में उनके व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं–'कालिदास का भारत', 'दण्डदेव का आत्म निवेदन', 'गोपियो की भगवत भक्ति' आदि। उनके आलोचनात्मक निबंधों में 'महिष शतक की समीक्षा', 'हिन्दी भाषा की उत्पत्ति', 'कालिदास का समय निरूपण' आदि निबंध आते हैं।

कुछ निबंधों में जीवनी, कथा, घटना, इतिहास को विषय बनाया है जैसे–'श्रीमद्भागवत', 'हंस संदेश', 'कादम्बरी', 'भारत के प्राचीन नरेशों की दिनचर्या', आदि। भाषा एवं व्याकरण सम्बन्धी निबंधों में–'अपनी भाषा की बात', 'भाषा और व्याकरण', 'हिन्दी नवरत्न' प्रमुख हैं।

द्धिवेदी जी के निबंधों की भाषा शुद्ध, समृद्ध और व्याकरण सम्मत है। वह न तो संस्कृत बहुल भाषा के पक्षपाती थे और न ही उर्दू, फारसी के बल्कि इन भाषाओं के लोक प्रचलित शब्दों के प्रयोग को उचित समझते थे। बालमुकुन्द गुप्त भारतेन्दु और द्धिवेदी युग को जोड़ने वाली कड़ी है। उनके निबंधों में एक ओर भारतेन्दु युग का राष्ट्रप्रेम, जन जागरण है तो दूसरी ओर द्धिवेदी युग की सधी हुई, व्याकरण सम्मत भाषा भी है। 'शिव–शम्भू का चिट्ठा' तथा 'बालमुकुंद गुप्त निबंधावली' उनके निबंध संग्रह हैं। रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है–'गुप्तजी की भाषा बहुत चलती, सजीव और विनोदपूर्ण होती थी। किसी प्रकार का विषय हो, गुप्त जी की लेखनी उस पर विनोद का रंग चढ़ा देती थी। वे पहले उर्दू के एक अच्छे लेखक थे, इससे उनकी हिन्दी बहुत चलती और फड़कती हुई होती थी'[10]

अध्यापक सरदार पूर्ण सिंह ने केवल छह निबंध मिलते हैं जो पुस्तकाकार भी प्रकाशित भी हैं–'सच्ची वीरता', 'कन्यादान', 'पवित्रता',

'वद्यक्रांति', 'आचरण की सभ्यता', 'मजदूरी और प्रेम' आदि।

पण्डित माधवप्रसाद मिश्र द्विवेदी युग के निबंधकार हैं। इन्होंने 'वैश्योपकारक' और 'सुदर्शन' पत्रों का संपादन किया। इनके निबंध एक ओर साहित्यिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और पुरातत्व सम्बन्धी विषयों पर हैं। सनातन धर्म के प्रति आस्था होने के कारण शुद्ध धार्मिक निबंध भी लिखे हैं–'श्री पंचमी', 'होली', 'रामलीला', 'व्यासपूजा', 'विजयादशमी', 'श्रावण के त्यौहार' आदि निबंध धार्मिक विषयों को लेकर लिखे हैं।

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्विवेदी युग के सबसे प्रगतिशील निबंधकार हैं। 'कछुआ धरम', 'मोरसि मोहिं कुठाऊँ', 'संगीत' आदि उल्लेखनीय हैं। श्याम सुंदरदास जी के प्रमुख निबंधों में भारतीय साहित्य की विशेषतायें', 'कर्तव्य और सभ्यता', 'समाज और साहित्य', 'हमारे साहित्योदय की प्राचीन कथा', 'कविता की कसौटी', 'देवनागरी और हिन्दी', 'हिन्दी भाषा और साहित्य' इनके प्रमुख निबंध हैं।

पद्मसिंह शर्मा के निबंधों में प्रमुख 'मुझे मेरे मित्रो से बचाओय', 'दयानंद सरस्वती मर गये', 'हिन्दी के प्राचीन साहित्य का उद्धार' आदि हैं। इनके निबंध 'पद्मपराग' और 'प्रबंध मंजरी' में संकलित हैं। गोविंद नारायण मिश्र ने साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर निबंध लिखे हैं जो 'गोविंद निबंधावली' में संग्रहीत हैं। 'कवि और त्रिकार' इनका प्रसिद्ध लेख है।

अन्य निबंधकारों में गणेश शंकर विद्यार्थी, किशोरीदास बाजपेयी, बाबू शिवपूजन सहाय, बाबू विष्णुराव पराड़कर जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी प्रमुख हैं।

द्विवेदी युग में निबंधकारों को नवीन विषय प्राप्त हुए, विभिन्न प्रकार के निबंधों की रचना हुई। स्वच्छंदता और उन्मुक्तता के स्थान पर विवेचन और गम्भीरता की वृद्धि हुई। भाषा का परिमार्जन एवं परिष्कार हुआ अब निबंध जनसाधारण की वस्तु न रहकर शिष्ट समाज की वस्तु भी बन थे।

शुक्ल युग : द्विवेदी युग तक निबंधों का विकास प्रौढ़ता प्राप्त कर चुका था। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उस प्रौढ़ता के विकास के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचाया। आचार्य शुक्ल ने साहित्य के क्षेत्र में कविता, कहानी, समालोचना और निबंधों का सृजन किया। इनके निबंध दो तरह के हैं– मनोविकार सम्बन्धी, आलोचना सम्बन्धी । शुक्लजी ने मनोविज्ञान में साहित्य और साहित्य में मनोविज्ञान एक साथ प्रस्तुत किया। 'चिन्तामणि' में शुक्ल जी का व्यक्तित्व उनकी शैली के व्यक्तित्व का प्रतीक बन गई। संग्रहीत निबंध उनकी गंभीर प्रवृत्ति के परिचायक हैं, इनमें से कुछ मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं और अन्य साहित्यिक दृष्टिकोण से लिखे गए हैं। 'उत्साह', 'श्रद्धा भक्ति', 'करूणा', लज्जा और ग्लानि', 'लोभ और प्रीति', 'घृणा', ईर्ष्या', भय और क्रोध आदि निबंधों में मानव के मनोविकारों का बेहद सूक्ष्म दृष्टि से विश्लेषण किया है।

आचार्य शुक्ल ने हिन्दी जगत में निबंध के क्षेत्र को एक नया मार्ग प्रशस्त किया। 'चिन्तामणि' मे संग्रहीत गंभीर मनोवैज्ञानिक निबंध अपना साहित्यिक महत्व भी रखते हैं। 'कविता क्या है?' 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था', 'साधारणीकरण व व्यक्ति वैचित्र्यवाद', 'रसात्मक बोध के विविध रूपय, 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र', 'तुलसी का भक्तिमार्ग' आदि साहित्यिक कोटि के निबंध हैं।

शुक्लजी की भाषा–शैली का मूल्यांकन करते हुए कहा गया है–'हिन्दी के किसी ऐसे सफल लेखक का यदि नाम लिया जाय, जिसने भाषा की समस्त शैलियों–विवेचनात्मक–व्याख्यात्मक शैली और उसके विविध रूप, निगमन–आगमन, आलोचनात्मक, तर्कप्रधान, तुलनात्मक, गवेषणात्मक, उद्धोधनात्मक तथा निर्णयात्मक आदि सब शैलियां, भावात्मक शैली, वर्णनात्मक, विवरणात्मक शैली, संभाषण शैली, हास्य–व्यंग्यात्मक शैली, आलंकारिक शैली आदि का निर्वाह, समान अधिकार, योग्यता, प्रौढ़ता, सफलता और सफाई के साथ किया हो, तो वे स्वनामधन्य पण्डित रामचन्द्र शुक्ल ही हैं।'[11]

बाबू गुलाबरायने विचारात्मक, भावात्मक, वैयक्तिक, सामयिक निबंधों की रचना की है जो हिन्दी के श्रेष्ठ निबंधों में अधिकांश निबंध–साहित्य–संदेश नामक पत्र में प्रकाशित हुए । निबंधों के विषय साहित्य, राजनीति, इतिहास, धर्म, दर्शन, पर्व त्योहार आदि से सम्बन्धित है। 'मेरी असफलताएं' निबंध संग्रह उनकी विनोद प्रवृत्ति को स्पष्ट करता है। साहित्यिक निबंधों में उनकी विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति दिखाई देती है। गुलाबराय ने विद्यार्थियों को उपयोगी निबंध भी लिखे हैं। 'प्रबंध–प्रभाकर' और 'निबंध–रत्नाकर' संग्रहों के निबंध इसी प्रकार के हैं।

सामयिक निबंधों में सीमावर्ती चोर' उनका इसी प्रकार का निबंध है। उनके अन्य निबंधों में 'कसोली' 'मेरी असफलताये' 'मेरे निबंध' 'जीवनपथ' 'मन की बात' 'फिर निराशा क्यों?' 'समाज और कर्तव्यपालन' प्रमुख हैं।

गुलाबराय की भाषा बड़ी सुदृढ़ है। कठिन विषय को भी सरल बनाकर प्रस्तुत करने की कला है–'भाषा की स्वच्छता, विचारों की स्पष्टता, वाक्य–विधान की सरलता और अभिव्यंजना की सुबोधता इनकी शैली के गुण हैं। तर्क–युक्ति, प्रमाण, परिमाण आदि इनकी शैली में कम ही आते हैं–वह सीधी स्वाभाविक आत्मीयता लिये होती हैं।'[12] भाषा सरल और मुहावरेदार, वाक्यों की सरलता, अभिव्यक्ति व्यावहारिक उनकी शैली की प्रमुख विशेषतायें हैं।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के निबंधों की विशेषता यह है कि निबंधों के माध्यम से हिन्दी के पाठकों को यूरोपीय साहित्य से अवगत कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पंचपात्र', 'कुछ और कुछ', 'प्रदीप', 'साहित्य शिक्षा', 'यात्री', 'बिखरे पत्र', 'मेरा जीवन क्रम', 'विज्ञान', 'समाज सेवा', 'अतीत स्मृति', 'एक पुरानी कथा', 'बंदर की शिक्षा' आदि उनके प्रमुख निबंध हैं।

सियारामशरण गुप्त गांधीवादी साहित्यकार थे आपने संस्मरण, यात्रा सम्बन्धी, सामाजिक, साहित्य आदि पर व्यक्तिनिष्ठ निबंध लिखे हैं। गांधीवाद का स्पष्ट प्रभाव निबंधों में दिखायी देता है। 'झूठ–सच', 'अन्य भाषा का मोह', 'सोच विचार''छुट्टी', 'घूंघट आदि निबंध है।

माखनलाल चतुर्वेदी ने विचारात्मक विषयों पर भी जैसे–'युग और कला', 'साहित्य देवता', 'रंग की बोली' भावात्मक निबंध लिखे हैं। निबंध संग्रहो में 'साहित्य देवता' हिन्दी निबंधों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 'अमीर इरादे गरीब इरादेय संग्रह में विचारों और भावों का योग है।

जयशंकर प्रसाद का निबंध साहित्य की अभिवृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान है। ऐतिहासिक निबंधों में 'विशाल', 'अजातशत्रु', 'राज्यश्री', 'स्कंदगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी', नाटकों की भूमिकाएं हैं 'आर्यावर्त का प्रथम सम्राट', 'इन्द्र' इसी श्रेणी के निबंध हैं। साहित्यिक निबंधों में 'प्रकृति सौंदर्य', 'भक्ति', ''चम्पू', 'कवि और कविता', व हिन्दी कविता का विकास आदि निबंध है। समीक्षात्मक निबंधों में 'काव्य और कला', 'रहस्यवाद', 'नाटकों का आरंभ', 'रस', 'नाटकों में रस का प्रयोग', 'रंगमंच', 'यथार्थवाद और छायावाद' आदि निबंध है।

हरिभाऊ उपाध्याय गांधीवादी दर्शन से प्रभावित थे। निबंध संग्रहों में– 'मनन', 'स्वागत', 'बुदबुद' आदि। दार्शनिक विषयों परमतत्व', 'जीवनसिद्ध', 'धर्म और नीति', 'सदाचार', प्रमुख निबंध हैं। रघुवीर सिंह भावात्मक निबंधकारों में जाने जाते हैं। निबंधों में भारतीय संस्कृति और इतिहास का सामंजस्य है। निबंधों में मुगलकालीन घटनाओं का विवरण मिलता है। प्रमुख निबंध संग्रहों में 'जीवन कण', 'शेष स्मृतियां', 'सप्तदीप', 'जीवनधूलि' प्रमुख हैं। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के विचारात्मक निबंधकारों में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। 'प्रबंध पद्म', 'प्रबंध प्रतीक्षा', 'प्रबंध पूर्णिमा', उनके प्रमुख निबंध हैं। श्री वियोगी हरि का नाम भावात्मक निबंधकारों में है। इनके निबंध संग्रहों में 'भावना', 'तरंगिणी', 'अन्तर्नाद', 'ठण्डे छीटे', 'मेरी हिमाकत' प्रमुख हैं।

प्रेमचंद मूलत: श्रेष्ठ कहानीकार और उपन्यास सम्राट हैं। इसके साथ ही एक निबंधकार के रूप में उनका विशिष्ट स्थान है। उनके अधिकांश निबंध साहित्यिक हैं– 'साहित्य का आधार', 'जीवन में साहित्य का स्थान', 'साहित्य में बुद्धिवाद', 'राष्ट्रभाषा हिन्दी और उसकी समस्यायें' 'साहित्य और मनोविज्ञान', उर्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तानी', 'कोमी भाषा' के विषय में कुछ विचार प्रमुख हैं।

पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी ने संस्मरणात्मक एवं जीवनीपरक निबंध लिखे हैं। 'हमारे आराध्य', 'रेखाचित्र', 'संस्मरण' इनके प्रमुख निबंध हैं

इस युग के अन्य प्रमुख निबंधकारों में पीताम्बर बड़वाल, राहुल सांस्कृत्यायन, डॉ. हरशिंकर शर्मा, श्रीराम शर्मा, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, काका कालेलकर, सुमित्रानंदन पंत, चतुरसेन शास्त्री, परशुराम चतुर्वेदी, धीरेन्द्र वर्मा प्रमुख हैं।

शुक्ल युग में प्राय: सभी प्रकार के निबंधों का पूर्ण विकास हुआ है। निबंधों के विषय का विस्तार, भाषा की प्रौढ़ता, विविध शैलियां इस युग के निबंधों की विशेषतायें हैं।

शुक्लोत्तर युग : शुक्लोत्तर युग हिन्दी निबंध साहित्य का स्वर्ण युग है। साहित्य, समाज, संस्कृति, दर्शन, मनोविज्ञान सभी विषयों पर निबंध की सृष्टि हो रही है। इस युग के निबंध मौलिक तो हैं ही साथ ही अनुदित निबंध भी हमें प्राप्त हो रहे हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंधकारों में प्रथम है। आचार्य द्विवेदी श्रेष्ठ निबंधकार, कथाकार एवं आलोचक हैं। 'अशोक के फूल', 'भारतीय फलित ज्योतिष', 'मेरी जन्मभूमि' आदि निबंधों में उनका संस्कृति और इतिहास के प्रति प्रेम स्पष्ट दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति के अनियंत्रित विस्तृत स्वरूप को उन्होंने पाठकों के समक्ष अपने 'संस्कृतियों का संगम' निबंधों में प्रस्तुत किया है। निबंधों में मानवतावाद उन पर रवीन्द्रनाथ टैगोर के प्रभाव को स्पष्ट करता है। आपके साहित्यिक निबंधों में यह मानव प्रेम बहुत निखरा है–'मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है', 'साहित्यकारों का दायित्व', 'सावधानी की आवश्यकता', ऐसे निबंध हैं जिनमें उनकी तन्मयता, हार्दिकता एवं कल्पना का सुंदर सामंजस्य मिलता है। द्विवेदी जी का नैसर्गिक सौंदर्य प्रकृति से प्रेम उनके निबंधों में व्याप्त है। 'अशोक के फूल', 'शिरीष के फूल', 'बसंत आ गया', आदि निबंध उनके प्रकृति प्रेम को दर्शाते हैं। 'अशोक के फूल', 'शिरीष के फूल', 'नाखून क्यों बढ़ते है', 'आम फिर बौरा गए', 'संस्कृतियों का संगम', 'भगवान महाकाल का कुंड नृत्य', आंतरिक शुचिता भी आवश्यक है', 'भारतीय फालित ज्योतिष', 'भारत वर्ष की सांस्कृतिक समस्या', 'भारतीय संस्कृति की देन', 'संस्कृत और साहित्य', 'रवीन्द्रनाथ के राष्ट गान', 'पुरानी पोथियां', 'काव्य कला', आदि प्रमुख निबंध हैं।

आचार्य नंददुलारे बाजपेयी समीक्षक, संपादक, अध्यापक थे। आलोचनात्मक निबंध संग्रहो में 'हिन्दी साहित्य : बीसवी शताब्दी', 'जयशंकर प्रसाद', 'प्रेमचंद', 'आधुनिक साहित्य', 'नया साहित्य', 'नये प्रश्न'आदि है। बाजपेयी जी हिन्दी समीक्षा के एक प्रमुख आधार स्तंभ हैं। मौलिक निष्पत्ति और साहित्यिक व्यक्तित्व की चिंतना के कारण साहित्य समीक्षा का निर्माता कहा जा सकता है। दर्शन, इतिहास और साहित्य का एक अद्भुत समन्वय उनके समीक्षात्मक निबंधों में मिलता है। बहुमुखी व्यक्तित्व को रेखांकित करने वाली पुस्तक 'हिन्दी साहित्य बीसवी शताब्दी' है इसके निबंध वास्तव में छायावाद को समझने–समझाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाते हैं। इसमें द्विवेदी युग के तीन प्रमुख लेखक लिए गए हैं– मैथिलीशरण गुप्त, रामचन्द्र शुक्ल और प्रेमचंद एक प्रकार से तीन दिशाओं का प्रतिनिधित्व करते है। कविता, समीक्षा और कथा साहित्य। आधुनिक साहित्य में सात खण्ड हैं जिसमें वे अपने समय की रचनाशीलता को उसके सामाजिक संदर्भो में रखकर देखते है। प्रसाद, निराला और पंत के काव्य पर विचार करते हुए बाजपेयी जी मुख्यत: उन बिंदुओं को स्पर्श करते हैं जो स्वतंत्र व्यक्तित्व देते हैं। इस कृति में उन्होंने प्रेमचंद से लेकर अज्ञेय तक लिखा है और प्रगतिवादी तथा प्रयोगवादी कवियों पर भी दृष्टि डाली है।

जैनेन्द्र कुमार मनोवैज्ञानिक निबंधकार हैं। जैनेन्द्र के प्रमुख निबंधों में 'प्रस्तुत प्रश्न', 'जड़ की बात', 'काम', 'प्रेम और परिवार', 'ये और वेय', 'व्यक्तिवाद', 'विचार वल्लरी', 'गांधी नीति' प्रमुख हैं।

महादेवी वर्मा संस्मरणात्मक निबंध हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि है। 'स्मृति की रेखाएं', 'अतीत के चलचित्र', 'पंथ के साथी', संकलनों के निबंध। ये निबंध उनकी मधुर स्मृतियों को समेटे हैं । विचारात्मक निबंधो मे 'साहित्यकार की आस्था', 'काव्यकला', 'छायावाद', 'रहस्यवाद', 'गीतिकाव्य', 'युद्ध और नारी', 'जीवन का व्यवसाय', 'आधुनिक नारी', 'जीने की कला', आदि प्रमुख हैं। महादेवी जी के वर्णनात्मक निबंधों में 'बद्रीनाथ की यात्रा', 'सुई दो रानी डोरा दो रानी' प्रमुख हैं।

वासुदेवशरण अग्रवाल ने भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं पुरातत्व सम्बन्धी विषयों पर निबंध लिखे है। 'कला और संस्कृति', 'माता भूमि', 'पृथ्वी पुत्र', 'वेदविद्या', 'वाग्धारा', 'भारत की मौलिक एकता' इनके प्रमुख निबंध है।

डॉ. नगेन्द्र एक श्रेष्ठ आलोचक है। निबंध संग्रहों में 'विचार और विवेचन', 'विचार और अनुभूति', 'काव्य चिंतन', 'विचार और विश्लेषण', 'कामायनी के अध्ययन की समस्यायें' प्रमुख हैं।

डॉ. रामविलास शर्मा प्रगतिवादी आलोचक है। आप मार्क्सवाद से प्रभावित हैं । 'संस्कृति और साहित्य', 'प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ', 'प्रगति और परम्परा', 'स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य' उनके प्रमुख निबंध संग्रह हैं।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' प्रयोगवाद के प्रवर्तक, मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार हैं। –'त्रिशंकु', 'आत्मनेय पद', 'सब रंग कुछ रंग', 'हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य', 'लिखि कागद कोरेय, आपके प्रमुख निबंध संग्रह है।

श्री विद्यानिवास मिश्र, प्रमुख ललित निबंधकार हैं। इनके प्रमुख निबंध संग्रहों में–'छितवन की छाँह', 'आँगन का पक्षी और बनजारा मन', 'तुम

चंदन हम पानी', 'बसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं', 'परम्परा बंधन नहीं', मेरे राम का मुकुट भीग रहा है–मैने सिल पहुंचाई', 'कटीले तारों के आरपार', 'अस्मिता के लिए' इनके प्रमुख निबंध संग्रह हैं।

आधुनिक युग के महत्वपूर्ण निबंधकारों में प्रभाकर माचवे, डॉ. रामदरश मिश्र, निर्मल वर्मा, डॉ. गोपाल राय, डॉ. श्रीराम शर्मा, देवेन्द्र सत्यार्थी, रामवृक्ष बेनीपुरी, उपेन्द्रनाथ अश्क प्रमुख हैं।

इस युग में व्यंग्य एक सशक्त विधा के रूप में महत्वपूर्ण उपलब्धि है।श्री हरिशंकर परसाई एक ऐसे व्यंग्यकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को उच्च स्थान दिया हैं। निबंध संग्रहों में–'भूत के पांव पीछे', 'बेइमानी की परत', 'पगडंडियों का जमाना', 'और अन्त में', 'शिकायत मुझे भी है', 'अपनी–अपनी बीमारी', 'वैष्णव की फिसलन', 'विकलांग श्रद्धा का दोर' प्रमुख है। अपने इन निबंधों में परसाई जी ने सामाजिक और मानवीय यथार्थ को उजागर किया है। शरद जोशी, गोपाल प्रसार व्यास, प्रभाकर माचवे ने भी श्रेष्ठ हास्य–व्यंग्यपूर्ण निबंध लिखे हैं।

अपने उद्भव काल से लेकर वर्तमान युग तक निबंध की विकास यात्रा में नित नये विविधरूपी स्वरूप देखने मिलता है। साहित्य, समाज, संस्कृति, मनोविज्ञान, दर्शन सभी विषयों पर निबंधों की सृष्टि हो रही है। तथा भाषा का विकसित रूप देखने मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. An Introduction of the study of literature W.H. Houtdson's Page 442.
2. An Introduction of the study of literature W.H. Houdson's Page 446.
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी संवत 2040 संस्करण बीसवा, पृष्ठ 344।
4. काव्य के रूप :बाबू गुलाबराय ;आत्माराम एण्ड संस 1967 संस्करण छठवां ,पृष्ठ 213।
5. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियां : डॉ. जयकिशन खण्डेलवाल ; विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा/1985 बारहवां संस्करण पृष्ठ 761।
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास:पण्डित रामशंकर शुक्ल रस्गल;पृष्ठ 730।
7. हिन्दी साहित्य का इतिहाय :आचार्य रामचन्द्र शुक्ल;पृष्ठ 307।
8. गद्य सोपान:संपादक लक्ष्मीनारायण दुबे ; चाँद कार्यालय इलाहाबाद 1970 पृष्ठ 158।
9. भारतेन्दु युग:डॉ. रामविलास शर्मा; कैलाश प्रिंटिंग प्रेस आगरा चतुर्थ संस्करण 1963 ,पृष्ठ 82।
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ 352 ।
11. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, निबंधयात्रा:डॉ. कृष्णदेव झारी; पृष्ठ51।
12. हिन्दी निबंधकार:जयनाथ नलिन, पृष्ठ 142।
13. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तिया : जयकिशन खण्डेलवाल ; विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 1985 बारहवां संस्करण , पृष्ठ 770 ।

****